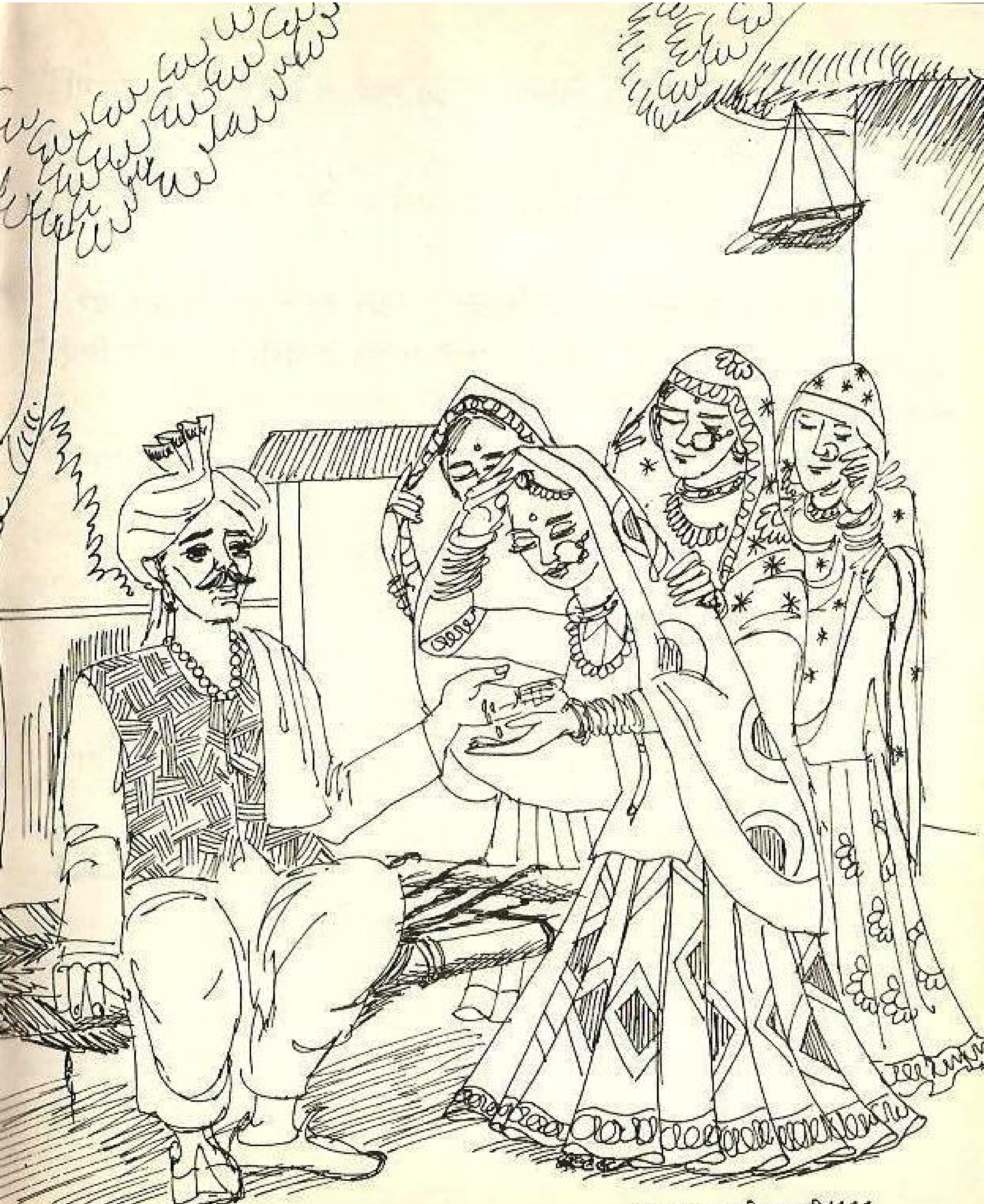

मन्नै लिए थे, वे दाणे तै इब गाड्डियां मैं आ सकैं सैं। किसे एक आदमी के बसके वे ठा कै ल्याणे कोन्या।"

"आच्छा.... वे पांच दाणे गाड्डी मैं आवैंगे? न्यूं क्यूक्कर?" सेट नै घणा-ए अचम्भा होया।

"ना तै मन्नै वे दाणे गेरे, ना खाये.... अर ना-ए ताले भीतर धरे... मन्नै तै वे खेत मैं बुआ दिये थे। जाहें तै ईब वे घणे-ए दाणे हो लिए अर गाड्डी मैं-ए आ सकैं सैं।" रोहिणी बोल्ली।

या बात सुण कै सेट की बूड्ढी आंख्याँ मैं पाणी भर आया। उसनै अपणा फैसला सुणाया- जो फैंकण मैं माहिर सै वा सारे घर की सफाई का काम सिंभालैगी। खाण मैं माहिर बहू घर की रसोई बणाया करैगी। जुण-सी सिंभालणा जाणै सै वा घर के खुज्जाने की देख-भाल करैगी अर सब तै छोट्टी बहू सारे घर की सरपंच रहूवैगी। एक वा हे सै जो धान्नाँ की तरियाँ घर की इज्जत अर घर का धन-मान बढा सकै सै।

न्यूं कह कै सेट नै चाबियां का पूरा गुच्छा सब तै छोट्टी बहू के हाथ पै धर दिया।

❑❑

साच्चे गरू योगिराज सिरी रामजीलाल जी म्हाराज

भारत बरस में एक महान संत होए परम सरधेय योगिराज सिरी रामजी लाल जी म्हाराज। उनका जनम हरियाणे कै बड़ौदा गाम मैं सम्मत १९४७ के भादुए के म्हीने की बदी नौमीं के दन (अगस्त १८९०ई.) होया था। उनके पिता जी चोधरी सुखदयाल अर माता सिरीमती लाड्डो बाई थी। बालक के जनम तैं उननैं मन मांगी मुराद मिलगी। बात या थी चौधरी सुखदयाल हर तीन भाई थे। उन तीनुआं कै योगिराज जी-ए एकले छोरे थे। जाएं तै उनके होण की खुसी चोगरदे कै ओर भी घणी थी। जिब उन नैं जनम लिया तै सारे कुणबे नैं त्युहार मनाया। बालक का नां धर्या रामजीलाल।

खेलदे-कूददे होए बालक रामजीलाल दूज के चन्द्रमा की ढालां बड्डे होण लाग्गे। सब उनत्ती घणा-ए लाड प्यार करैं थे। रामजीलाल जी आपणे बड्यां की खूब ए इज्जत करैं थे। उनका कह्या मानैं थे। आस्ता-आस्ता वे जुआन हो ग्ये। जुआन हो कै वे पूरे-ए कद्दावर लिकड़े। जितणी ताक्कत उनकी देही मैं थी, उनके जी मैं उस तै भी घणी हिम्मत थी। न्यूं देख कै बड़ोद्दे के जुआन उनके धोरै कट्ठे होण लाग्गे। रामजीलाल जी उनके परधान बण गे। सारे गाम मैं उनकी जुआन पाल्टी का रूक्का पड़ ग्या। छोरां की इस पाल्टी तै सारे लोग डर्या करदे।

सम्मत् १९६८ (सन् १९११) मैं उस जमान्ने के सब तै ऊंच्चे संत चारित्तर चूड़ामणी सिरी मायाराम जी महाराज का चमास्सा बड़ोद्दे मैं होया। उस चमास्से मैं बड़ा धरम ध्यान होया। सारा-ए गाम जैन धरम की भगती मैं लाग्य ग्या। एक दन गाम के बड्डे-बडेरां ने सिरी मायाराम जी म्हाराज तै कह्या- गरू महाराज! थाम नैं सारा गाम धरम मैं ला दिया। चुगरदे नै थारी जै-जैकार हो र्ही सै। बाकी म्हारे जी नै सांती जिब आवै, जिब थाम रामजीलाल नै अर उसकी पाल्टी ने सुधार द्यो।

यू रामजीलाल कुण सै भाई? सिरी मायाराम जी म्हाराज ने बूज्झा! बडेरां ने म्हाराज तैं सारी बात बताई। सुण कै म्हाराज बोल्ये- देखो-कोसस करूंगा, जुआनां नै समझाण की। उस चमास्से मैं सिरी मायाराम जी तै योगिराज जी मिल्ले। अर उनका उपदेस सुण कै धरम ध्यान मैं लाग ग्ये। फेर उनके जी मैं आया - यू संसार झूट्ठा सै। साद्धु बण कै आपणी आतमा का किल्लाण करणा चहिए। जिब इस बात का बेरा मां-बांपां नै लाग्या तै सब नैं सिमझाण खात्तर पूरा जोर लाया पर रामजीलाल पै तै मायाराम जी का रंग चढ रह्या था। ओ के उतरै था! दो साल पाच्छै उस रंग के चिमकण का टैम आ ग्या। पर देक्खो........ करम की बात। जिब रंग चिमकण का बखत आया तै रंग चढ़ाण आले मायाराम जी ए ना रहे। फेर उसनैं के सब तै छोट्टे चेल्ले सिरी सुखी राम जी म्हाराज गरू बणाए। रामजीलाल जी नैं उनके चरणां मैं दिल्ली के सदर बजार मैं सम्मत १९७१ के मंगसिर के म्हीने मैं किरसन पक्स की चोदस के दन (१६ नवम्बर, सन् १९१४) साद्धू बणन की दीक्सा ले ली। ईब वे मुनी रामजीलाल कुहाण लाग्गे। गरू की सेवा अर धरम का आचरण छोड कै

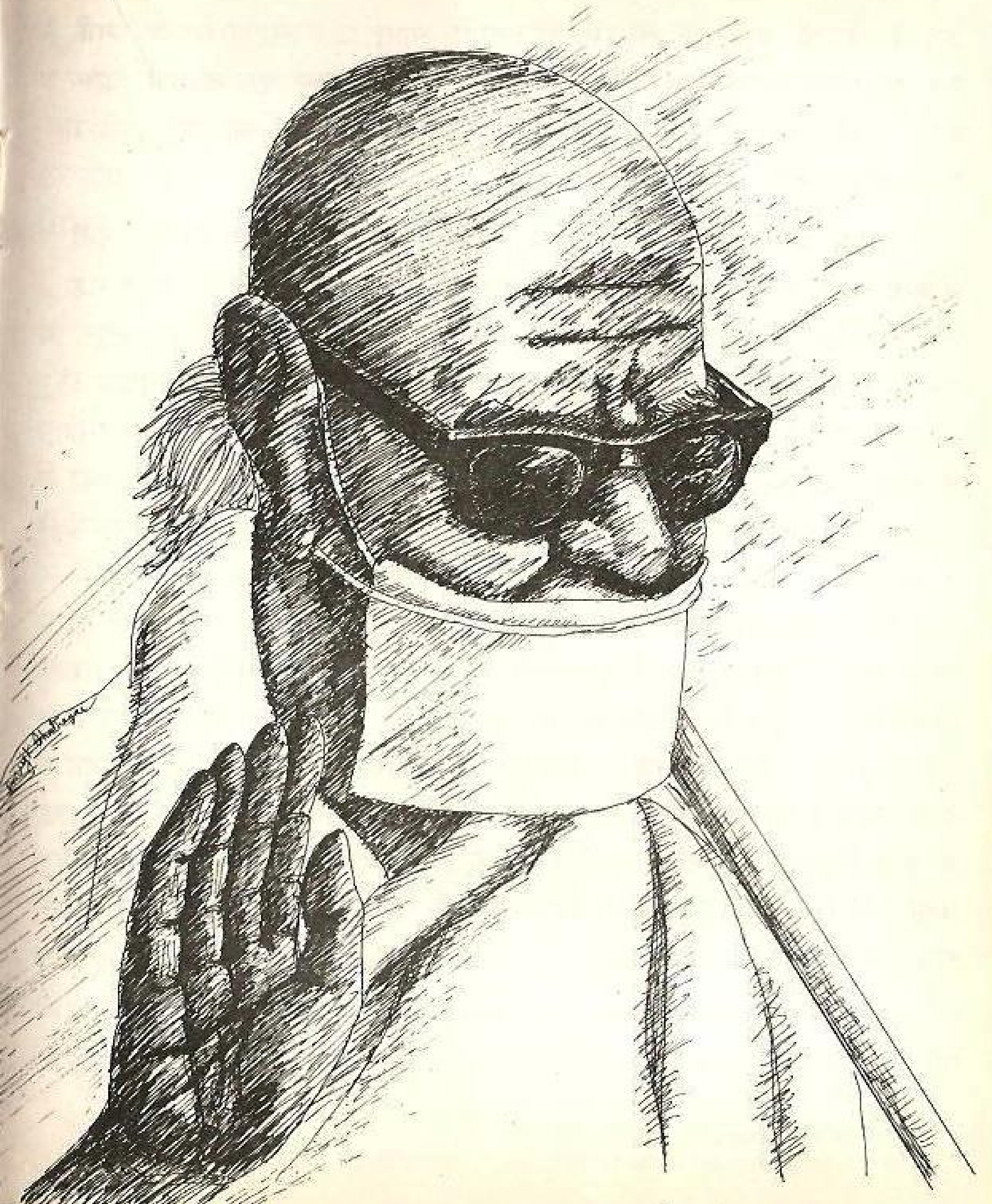

उन नैं आपणे जीवन में तीसरी चीज नहीं आण दी। सैहूज-सैहूज उनके दन रात बस ग्यान का सुबेरा बण गे। उनके ग्यान का चांदणा चारूं कान्नीं बिखरण लाग्या। आपणे गरू के चरणां मैं जैन सास्तर पड्ढे। पड्ढे अर उनकी बात्तां पै चाल्ले।

साद्धू बणें पाच्छे आपणे जी मैं तिरिस्ना का उन नैं नाम-निसान नहीं छोड्या। ना तै उनमैं इस बात की तिरिस्ना थी अक मेरे नाम के झण्डे गड ज्यां अर ना-ए इस बात की तिरिस्ना थी अक मैं छूट के चेल्ले कर ल्यूं। उन नैं तै बस आपणा आप्पा पढ्या अर ग्यान का परसाद सार्यां तै दिया। आपणी आखरी सांस ताई वे मन तै भी साद्धू रहे, बचन तै भी अर करमां तै भी। उन नै तै आपणा पूरा ध्यान योग मैं ला राख्या था। बाहूर की दुनिया मैं उनका कुछ ना था। उनका जो कुछ था ओ भीतर की दुनिया मैं ए था। सारी तिरिस्ना छोड कै उन नैं मन अर आतमा एक बणा राक्खे थे। बरमचर्यै की ताक्कत तै उनकी योग-साधना ऊप्पर ताईं पहोंच गी थी। जाएं तै सन् १९३३ में राजस्थान के अजमेर सैहूर मैं साधुआं नैं अर गिरस्तियां नैं उन तैं 'योगिराज' का पद दिया। सारी जिनगी वे आपणी योग-साधना मैं-ए लाग्गे रहे। उनकी साधना पै ना तै योगिराज कुहाण का कोए फरक पड्या अर ना ए साद्धुआं के संघ नायक बणन का। हरियाणा के जींद सैहूर मैं सन् १९६४ मैं वे साद्धुआं अर सरावगां नैं 'संघ नायक' बणाए थे। उनकी निगाह मैं बड्डे-छोट्टे अर जात-पांत का कोए भी भेद-भाव ना था।

योग-साधना, धरम-ध्यान अर तिपस्या तैं उनकी आत्मा सुद्ध अर पवित्तर बणगी थी। बड्डी-बड्डी सिद्धियां उन मै परगट होगी थी। उनकै

मूं तै जो भी बाणी लिकड़ ज्यादी, वा न्यूं-ए पूरी बणै थी अर पूरी हो थी। उनकी दया-दिरस्टी कदूदे खाली ना जा थी। जिसपै उनकी निंग्हा पड़ ज्यांदी हो-ए न्हाल हो जांदा। चारूं कान्नीं उनकै नां का रूक्का था। हरयाणै की परजा उनती भगवान मानै थी। उनकी दया-दिरस्टी अर वचन सिद्धी की एक-दो बात आड़ै बताई जा रूही सैं-

एक बर योगिराज जी का चमास्सा हरियाणा के पुरखास गाम मैं था। या सम्मत् १६७४ की बात सै। उन दिनां सारे कै कात्तक की बेमारी फैल रूही थी। दुनिया उस बेमारी मैं गलगप् होण लाग रूही थी। रोहा-राट् माच रूह्या था चोगरदे कै। डागदरां धोरै कोए इलाज ना था। पुरखास के लोग भी उस बेमारी के कब्जे मैं थे। योगिराज जी जात-पांत का भेद-भाव करे बिना गाम के सारे घरां मैं रूहोज नेम तै मंगली सुणान जाया करते। भगतां नैं खूब सिमझाए अक या छूत की बेमारी सै। आप न्यूं मंगली सुणाते मत न्यां हांडूया करो पर योगिराज जी कोन्यां मान्ने। वे तै एक-ए बात मान्नैं थे अक सादूधू तै ओरां खात्तर जीया करै। वे मंगली सुणाते पूरे गाम मैं हांडते रहे। एक दन तड़कैं-ए तड़क जंगल् हो कै थानक ताईं आंदे आंदे वे भी बेमार हो गे। सिरी अमीलाल जी म्हाराज उन खातर दूध लेण लिकड़े। करम कर कै दूध तै कोन्यां मिल्या पर लूहासी मिलगी। थानक मैं वा ल्हासी धर कै फेर गए। योगिराज जी नैं तिस लाग्गी तै जी भर कै छाछ पी ली। सिरी अमीलाल जी म्हाराज गरम दूध ले कै आए तै देख्या अक योगिराज जी कत्ती ठीक हो लिए सैं। दूध की बूज्झी तै वे बोल्ले- मन्नै तै छाछ पी ली अर मैं ठीक हो ग्या। दूध किसे ओर सादूधू तै दे दूयो।

योगिराज जी सिमझ गे अक कात्तक की बेमारी का इलाज लिकड़्याया सै। वे पहलां की तरियां मंगली सुणान जाण लाग्गे। लोग्गां नैं बेरा पाट्या। फेर वे भी ल्हासी पीण लाग्गे। फेर के था। या कात्तक की बेमारी की दुआई बण गी। छाछ पी-पी कै सारे ईसे हो गे- जाणुं बेमार पड़े-ए ना थे। सारे गाम मैं रूक्का पाट ग्या अक योगिराज जी की किरपा तै सारा गाम बच ग्या। ना तै बेरां नां के होंदी। इस बात तै सार्‌यां कै जँच गी अक यू साद्‌धू तै परमात्मा का रूप सै।

एक बर उनका चमास्सा हरियाणे के कैत्थल सैहर मैं था। एक दन जिब वे तड़कैं-ए जंगल़ गए तै एक आदमी नैं आपणी जोत्तस लाई अर थानक ताईं उनके पाच्छै-पाच्छै आ लिया। राम-राम कर कै बोल्या, "म्हातमा जी! मैं थारा भगत कोन्यां। मैं तै आपनैं जुहारात का ब्योपारी जाण कै पाच्छै लाग लिया था पर आड़ै आ कै बेरा पाट्या अक मेरी जोत्तस झूट्‌ठी सै। मैं जिनगी तै हार लिया सूं। घर मैं कोए काम-धंधा भी कोन्यां। घर तै मैं न्यूं-ए लिक्कड़ लिया था। आप दीख गे तै जोत्तस ला कै देख्या अक आप जुहारात के घणे बड़्डे ब्योपारी सो। पर आप तै साद्‌धू लिकड़े। मन्नैं आप तै के फैदा हो सकै सै ?"

योगिराज जी नैं बूज्झी अक "तू कुण-सा काम जाणै सै अर घर का काम-धंधा कित गया?" उसनै बताई, "मैं हिकमत जाणूं सू। पहल्यां इस्सै सैहर मैं हिकमत की दुकान कर्‌या करता। बखत नै ईसा धक्का दीया अक दुकान बंद करणी पड़गी। आज रोटियां का भी तोड़ा हो ग्या।" योगिराज जी बोल्ले अक "तेरी जोत्तस झूट्‌ठी कोन्यां। हम सांच्चें-ए जुहारात के ब्योपारी सैं। मैं तन्नैं तीन रतन ईसे दे दयूंगा अक ना तै उनकी चोरी होवै

अर ना ए वे कित्ते खूवैं। तू हिकमत जाणे सै ना! ये तीन्नूं रतन आपणे भित्तरले मैं सिंभाल ले अर हिकमत कर। पैहूला रतन सै अक कदूदे किसे बेमार तै नकली दुआई मत न्यां दिए। दूसरा रतन सै अक जो बेमारी काब्बू की ना हो उसका इलाज मतन्यां करिए, अर, तीसरा रतन यो सै अक गरीब आदमी तै कदूदे फीस मत न्यां लिए। ये रतन ले ज्या। हम भी देक्खैंगे। अक तेरे घर का दलदूदर कद ताईं ना लिकड़े। चार म्हीने मैं आड़े ए ठैहरूंगा। रूहोज बखाण हो सै। टैम काढ़ कै बखाण सुणन भी आया करिये।" तीसरे दन तै उसनैं हिकमत सरू करी। योगिराज जी नैं उसकी दुकान पै जा कै मंगली सुणाई। चार म्हीने पाच्छै जिब योगिराज ओड़े तै चाल्लण लाग्गे तै उसनैं भरी सभा मैं कही, "भाइयो! बड़े करमां तै ईसे सादूधुआं के दरसन हों सैं। इनकी किरपा तै मन्नै फेर हिकमत करी अर आपणे घर तै दलदूदर धोया। मेरी जोत्तस झूटूठी ना थी। ये तै साच्चें एं जुहारात के ब्योपारी सैं।"

सिरी योगिराज जी म्हाराज नै भारत के गाम-गाम मैं हांड-हांड कै साच्चे धरम का परचार करूया। लाख्यां आदमियां तैं अहिंसा-सत्ते-परेम की राही बताई। परेम-प्यार तैं रूहैणा सिखाया अर भूंडे काम छोड्रय कै सदाचार तै जीणा सिखाया। उनकै उपदेसां तै हज़ारां आदमियां ने जूआ खेलना मांस-अण्डा खाणा, सराब पीणा जिसे-जिसे भूंडे काम छोड्रय दिए।

साच्ची बात तै या सै अक वे साच्चे सादूधू थे अर साच्चे गरु थे। साच्चे सादूधू की पिछाण-ए या हो सै, ओ काम, किरोध, मोह, लोभ, मान-बड़ाई का त्यागी हो सै। जीउ मात्तर तैं ओ परेम करूया करे। जात्ती-पांत्ती अर ऊंच-नीच का ओ फरक कोन्या करता। ओ सब नै

एक-सा सिमझा करै। योगिराज सिरी रामजीलाल जी म्हाराज इसे-ए साच्चे गरु थे। उनकै धोरै हिन्दू, मुसलमान, सिरदार, बाल्मीकि मतबल सारै धरमां के माणस आवैं थे अर उनती आपणा गरु मान्नै थे।

उन नैं साधना करते-करते जिब देख्या अक यो सरीर ईब आतमा की साधना मैं साथ कोन्यां दैंदा तै उन नैं ओ छोड दिया। उनका आखरी चमास्सा अमीनगर (मेरठ, उत्तर प्रदेश) मैं था। ओड़े की माट्टी मैं आस्सुज म्हीने की अंधेरी पांचम के दन, सम्मत् २०२४ मैं योगिराज सिरी रामजीलाल जी म्हाराज नैं आपणी देही छोड्डी। उस टैम ओड़ै देस जुड़ ग्या। व्हाणियां ताईं जै कारे बोलती होई दुनिया गई। योगिराज जी म्हाराज चंदन की तरियां दुनियां मैं आपणी मैहूक छोड गे। योगिराज जी म्हाराज का सरीर बेस्सक खतम हो ग्या पर उनका जीणा अमर हो ग्या।

उनके चेल्ले जैन् सासन सूरज गरूदेव सिरी रामकृसन जी म्हाराज अर सिरी सिवचंद जी म्हाराज ईब भी उनके चरणां के निस्सान्नां पै चाल्लण लाग रूहे सैं। योगिराज जी म्हाराज की किरपा तै सिरी रामकृसन जी म्हाराज नैं धरम के ठाठ ला राक्खे सैं। जंगा-जंगा योगिराज जी की किरपा तै हस्पताल अर सकूल चाल्लण लाग रूहे सैं अर दुनिया का भला हो सै।

सिरी योगिराज जी म्हाराज के चरणां मैं म्हारी हाथ जोड्य कै बंदना!

❑❑

परिशिष्ट

RAJESH SHARMA